स्मृति चित्रावली

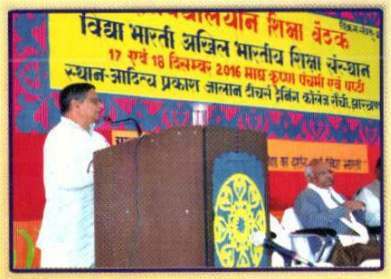

Printed at : RAJLATA PRINTERS, Malahi Pakri Chowk, Kankarbagh, Patna-20, Mob. : 9334312827

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित

महाविद्यालयीन शिक्षा बैठक

आयोजन तिथि

पौष कृ.04 एवं 05; युगाब्द 5118; वि.सं.2073

दिनांक 17 एवं 18 दिसंबर, 2016

स्मारिका SOUVENIR

—आयोजन स्थल—

आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज

कुदलुम, राँची (झारखंड)

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित

महाविद्यालयीन शिक्षा बैठक

स्मारिका

विशेष सान्निध्य व मार्गदर्शन

श्री सुरेश सोनी जी

मा. सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

विशिष्ट उपस्थिति

1. डॉ. गोविन्द शर्मा
अध्यक्ष, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

2. श्री जे.एम. काशीपति
संगठन मंत्री, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

3. डॉ. नन्द कुमार इन्दु
उपाध्यक्ष, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

4. श्री दिलीप बेतकेकर
उपाध्यक्ष, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

5. श्री प्रकाश चन्द्र
मंत्री, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

6. श्रीमती रेणु माथुर
राष्ट्रीय संयोजिका, महाविद्यालयीन शिक्षा

—संपादन सहयोग—

दिलीप कुमार झा

क्षेत्रीय सचिव, विद्या भारती, बिहार

—आयोजन स्थल एवं तिथि—

आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज

17 एवं 18, दिसंबर 2016

पौष कृष्ण 04 एवं 05, विक्रम संवत् 2073

आमुख

शिक्षा अखंड है, अक्षुण्ण है। शिक्षा विभाजित नहीं की जा सकती, टुकडों में बाँटी नहीं जा सकती।

सुविधा के लिए हम प्राथमिक, माध्यमिक ,उच्च माध्यमिक, उच्च शिक्षा ऐसी व्यवस्था करते हैं। लेकिन शिक्षा का विचार हिस्सों में नहीं होना चाहिए। शिक्षा के बारे में संपूर्णता in totality से सोचना चाहिए ।

अपना कार्य शिशु मंदिरों से प्रारम्भ हुआ । नैसर्गिक क्रम से विकास और विस्तार भी हुआ। भौगोलिक दृष्टि से अपना कार्य देशव्यापी तो हो गया है। शिशु अवस्था से बालक हमारे पास आते हैं। सामान्यतः प्राथमिक व माध्यमिक स्तर तक हमारे विद्यालयों में संस्कार और शिक्षा ग्रहण करते हैं। अब तो उच्च माध्यमिक स्तर तक भी बहुत विद्यालयों का विकास हुआ है, यह हम अनुभव करते हैं। हम सबके लिए यह विकास की यात्रा हर्ष और गौरव की ही है।

विद्या भारती को अब यह विकास यात्रा आगे बढानी चाहिए, महाविद्यालयीन शिक्षा में भी पहल करनी चाहिए, ऐसे सुझाव अनेक बैठकों में कार्यकर्ता बंधु देते थे। कुछ बंधु तो ऐसा भी कहते थे कि हमें बहुत देर हो चुकी है। इस विषय पर चर्चा, विचार भी हो रहा था। अब इस विचार का क्रियान्वयन करने का समय आया है।

इस विषय पर चिंतन करने हेतु कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं की दो दिवसीय गोष्ठी रांची (झारखंड) में संपन्न हुई। मा.सह सरकार्यवाह श्री सुरेश जी सोनी, विद्या भारती अध्यक्ष डॉ. गोविन्द जी शर्मा, संगठन मंत्री श्री काशीपती जी, मंत्री श्री प्रकाशजी आदि ज्येष्ठ अधिकारी बंधुओं का मार्गदर्शन मिला।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा की क्या स्थिति है, विद्या भारती द्वारा क्या और कैसे प्रयास चलते हैं, भविष्य में हम सब मिलकर उच्च शिक्षा में क्या कर सकते हैं, इन विषयों पर काफी चिंतन हुआ। वर्तमान में लगभग 45 स्थानों पर अपने कार्यकर्ताओं द्वारा उच्च शिक्षा के प्रयोग और प्रयास चल रहे हैं। उनमें से ज्यादातर अध्यापक महाविद्यालय हैं। कई स्थानों पर प्रोफेशनल और कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय भी चलते हैं। इन सभी संस्थाओं का प्रतिनिधित्व इस बैठक में हुआ। बहुत उत्साह, ऊर्जा और सकारात्मक भाव से सहभागिता हुई ।

भविष्य में उच्च शिक्षा की दृष्टि से कैसे और क्या प्रयास आवश्यक है, इस पर भी काफी विचार हुआ। अनेक संभावनायें और नये-नये अवसर सामने आये। कौशल विकास, गुणात्मकता, सामाजिक दायित्व, समाज में अपनी पहचान आदि बिन्दुओं पर विचार प्रकट किये गये। संगठनात्मक दृष्टि से विचार हुआ। नये महाविद्यालय खोलने की संभावना सामने आयी। बैठक का वृतांत आपके सामने रखने में हमें हर्ष है।

सबकी सक्रिय सहभागिता से हम उच्च शिक्षा में भी अपना एक स्थान निर्माण कर सकते हैं, ऐसा विश्वास सबके मन में जगा।

इस कार्य में माँ शारदा हम सब को शक्ति, युक्ति, बुद्धि और प्रेरणा दे।

विनीत नेवटकर

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

गो.ला.त्रे सरस्वती बाल मंदिर परिसर रिंग रोड.
नेहरू नगर, नई दिल्ली-६५
दूरभाष-29840126, 29840013
email : vbabss@yahoo.com

Letter No- 167/2016-17 **Dated- 23/11/16**

TO

Subject : <u>Meeting of Principals, Management and Karyakartas associated with Higher Education.</u>

Pranam,

We are happy to know that you are actively involved in running and managing Higher Educational Institute . Your relentless efforts and experience have made your institute a highly esteemed one. Now it is high time that all the likeminded people,like you ,working in the field of higher education,throughout the country,with the mission and dream of making Bharat the super power of the world , meet and share their ideas , views, plans and experience .

With this aim in view VidyaBharati has organised a two days meeting at Ranchi on 17th and 18th December 2016. Shri Prakashji , secretary and Incharge of Higher Education , attempted to either meet in person or have telephonic communication with you. The response is overwhelming and encouraging.

We plan to discuss the following topics. This agenda will facilitate you to come prepared for deliberation.

1. Our aim and role in managing a good educational institute
2. Qualitative education-
   (a) Teachers' Training Institut.
   (b) General Education viz B.A, B.Com, B.Sc.
   (c) Technical & Technological Education
   (d) Management Institutes
   (e) Integrated Education
3. Our role in society's involvement & participation in Education-
   (a) Principals
   (b) Trustees
4. Social awareness
5. Skill development
6. Present status of our activities, programs and achievements
7. Future course of action

Brochures, reports of your institutes could be of great help and use for other participants. Hence you are kindly requested to bring sufficient copies to share.

This meeting will be an important milestone in the long educational journey of Vidya Bharati in general and higher Educatiion in particular.
Your active participation is of immense value for us.

Regards

LalitBihari Goswami
(General Secretary)

Copy- Kendriya Karyakarni
Kshetriya avam Prantiya Org. Sec./ Sec

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

गो.ला.त्रे सरस्वती बाल मंदिर परिसर रिंग रोड.
नेहरू नगर, नई दिल्ली-६५
दूरभाष-29840126, 29840013
email : vbabss@yahoo.com

पत्रांक-१६७/२०१६-१७ दिनांक-२३-११-२०१६

सेवा में,

विषय– महाविद्यालयीन शिक्षा के संबंध में प्राचार्य, प्रबंधन एवं कार्यकर्ताओं की बैठक हेतु विचार बिन्दु।

मान्यवर,

नमस्कार।

यह प्रसन्नता का विषय है कि आपका संस्थान उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण कार्य में आपके संचालन व प्रबंधन में सक्रिय रूप से रुचि ले रहा है। आपकी सक्रियता तथा अनुभव से अर्जित सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों द्वारा आपके संस्थान ने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट स्थान बनाया है।

यह उपयुक्त समय है कि जब अपने देश को शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठतम मानदण्डों पर स्थापित करने के लिए तथा महाविद्यालयीन शिक्षा के क्षेत्र में और उत्कृष्ट व जनउपयोगी बनाने के लिए सभी समविचारी संस्थान एक साथ मिल बैठकर अपने विचारों, प्रयोगों, अनुभवों तथा योजनाओं का पारस्परिक आदान–प्रदान करें।

इस विषय पर विचार करने के लिए राँची (झारखण्ड) में दिनांक 17–18 दिसम्बर को विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान एक बैठक का आयोजन कर रहा है। इस सम्बंध में श्री प्रकाश चन्द्र जी मंत्री, विद्या भारती ने आप से व्यक्तिगत मिलकर या दूरभाष पर चर्चा की होगी। स्थान–स्थान से उत्साह जनक परिणाम मिले हैं। बैठक में विचारणीय विषय निम्न हैं–

1. उत्कृष्ट महाविद्यालयी शिक्षा संस्थान चलाने का हमारा उद्देश्य एवं भूमिका
2. गुणात्मक शिक्षा :– (क) शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान
   (ख) सामान्य शिक्षा यथा विज्ञान, वाणिज्य व मानविकी में स्नातक, परास्नातक
   (ग) तकनीकी व प्रौद्योगिकी शिक्षा
   (घ) प्रबंधन संस्थान
   (ङ) समन्वित शिक्षा
3. शिक्षा में समाज की सहभागिता एवं संलग्नता के संबंध में प्राचार्य व प्रबंधन के रूप में हमारी भूमिका
4. शिक्षा से समाज जागरण
5. कौशल विकास
6. वर्तमान में हमारी गतिविधियों की स्थिति, कार्यक्रम व उपलब्धियाँ
7. भविष्य के लिए कार्ययोजना

आप अपने संस्थान के विवरणिका/महाविद्यालय से संबन्धित पत्रक, वार्षिक गतिविधियों की आख्या व उपलब्धियों आदि का कर–पत्रक आदि साहित्य पर्याप्त मात्रा में साथ लेकर आवें जिससे अन्य बंधु/भगिनी भी लाभान्वित हो सकें।

यह बैठक आप सबके सक्रिय सहयोग से महाविद्यालयीन शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी साबित होगी ही।

भवदीय

(ललित बिहारी गोस्वामी)
महामंत्री

प्रति– केन्द्रीय अधिकारी
क्षेत्रीय संगठन मंत्री/मंत्री व प्रांतीय संगठन मंत्री/मंत्री
क्षेत्रीय एवं प्रान्तीय कार्यालय, श्री अतुल कोठारी जी

कार्यक्रम : एक दृष्टि में..

Programme : At a Glance

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा दिनांक-17 एवं 18 दिसंबर 2017 को विद्या विकास समिति, झारखंड द्वारा संचालित आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, कुदलुम, राँची (झारखण्ड) में आयोजित राष्ट्रीय महाविद्यालयीन शिक्षा बैठक अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुई जिसमें आद्यांत पूर्ण समय के लिए मा. सह सरकार्यवाह श्री सुरेश जी सोनी की उपस्थिति अत्यंत उत्साहपूर्ण और प्रेरक रही। उनके समापन उद्‌बोधन ने कार्यकर्ताओं को महाविद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने की एक संतुलित और सम्यक् दृष्टि प्रदान की।

प्रथम दिवस अर्थात् 17 दिसंबर' 17 के 11:00 बजे बैठक का उद्‌घाटन श्री सुरेश सोनी, मा. सह सरकार्यवाह के कर-कमलों से हुआ तथा विद्या भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गोविंद शर्मा ने प्रास्ताविक उद्‌बोधन किया। उद्‌घाटन सत्र में स्वागत व परिचय विद्या भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री दिलीप बेतकेकर जी ने कराया तथा राष्ट्रीय मंत्री श्री प्रकाश चंद्र जी ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि रखी। द्वितीय सत्र में चार समूहों में गुणात्मक शिक्षा (quality education) और कौशल विकास (skill development) विषय पर काफी विस्तृत चर्चा हुई। रात्रि के सत्र में क्षेत्रशः शिक्षा में समाज की सहभागिता (Participation of Society in Education) विषय पर चर्चा हुई।

दूसरे दिन 18 दिसंबर' 17 के प्रथम सत्र में वंदना के उपरांत क्षेत्रशः संपन्न चर्चा की वृत-प्रस्तुति हुई। इस दिन के दूसरे सत्र में क्षेत्रानुसार महाविद्यालयी कार्य-योजना पर काफी विस्तार से चर्चा हुई। अंत में 02:30 बजे के समापन सत्र में मा. सुरेश सोनी जी के सारगर्भित उद्‌बोधन ने प्रेरणा का वातावरण निर्माण किया। इस प्रकार, दो दिनों की यह बैठक अत्यंत प्रभावी वातावरण में संपन्न हुई।

पूरे देश से कुल 84 (चौरासी) प्रतिभागियों ने इस बैठक में भाग लेकर साफल्य प्रदान किया।

GIST OF THE MEETING

Vidya Bharati Akhil Bharatiya Shiksha Sansthan organised a two day meeting on College Education at Aditya Prakash Jalan Teacher's Training College, Kudlum, Ranchi (Jharkhand) on 17-18 December 2016 and 84 participants from the different places and corners of the country attended the meeting. It was the special feature of the meeting that all the delegates feel a great pleasure and chance to have the whole time presence and guide of honourable Sah Sirkaryawah Shri Suresh Soni Ji, Dr. Govind Sharma, President of Vidya Bharati Akhil Bhartiya Shiksha Sansthan, All India Organising Secretary Sri Kashipati Ji, Rashtriya Mantri Sri Prakash Chandra Ji, Vice Presidents Sri Dilip Betkekar and Dr. Nand Kumar Indu and Smt. Renu Mathur, National Convener were the guests of honour. The subjects of discussion and discourse were as follows–

(a) Involvement of Society in Education and Social Awareness through Education.

(b) Quality Education and Skill Development.

(c) Regionwise Action Plan for College Education.

The following focus points emerged out of the two day marathon meeting :-

(a) Some of the colleges are run by Vidya Bharati. They are well guided. But, on the other hand we should strive to add some of the other colleges as contact institutions. We must try to uplift the standard of colleges.

(b) There must be a healthy communication system.

(c) There must be model colleges also.

(d) Some Research Centres should be founded.

(e) Vidya Bharati should also work in the sphere of teacher education, technical education and law education.

(f) It was suggested that a self-finance Deemed University should be

started.

(g) In brief, it was the common view that Vidya Bharati must work in the area of higher education.

(h) There must be website of the college.

(I) For the expansion and better development of colleges there should be a co-ordinator.

(j) Vidya Bharati must pay proper attention to teachers' training.

(k) We can do a lot to reform and change the operative and working system in Govt. Colleges.

(l) There must be a comprehensive calendar.

(m) We must take effort to improve the quality of education and restore the credibility of education system.

(n) There must be a sense of social commitment in education along with the building of life. Efficient individuals should be built up. Students should be imparted value education.

(o) We should strive to affect and change the education system.

(p) Nursing colleges should be founded somewhere. Along with the colleges of journalism and physical education should be established. The number of colleges pertaining to teacher education should be increased. It was also suggested that we should found medical college.

(q) Involvement of society in education is important. The involvement is to be increased. Social awareness by education is very important. We can contribute to the campaigns for cleanlines, water preservation, to control pollution etc.

(r) We should try for development of skills.

(s) Our colleges should run Sanskar Kendras, Shiksha Kendras etc. for literacy and education among the deprived and downtrodden class. Still there are several evils of our society and we can play an effective role to eradicate those evils. We can be the part of activities and campaigns to save the environment.

ooo

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

महाविद्यालयीन शिक्षा बैठक

आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, कुदलुम, राँची

कुल महाविद्यालय : 45 + 2 D.Ed. (B.T.C.) आलोक : कानपुर (उत्तर प्रदेश) एवं ऊवना (हरियाणा) में डी.एड. कॉलेज चल रहें है।

B.Ed. College	20 + 1	(PG College के साथ B.Ed. / M.Ed.
Degree College	15	शिकारपुर, मेरठ में चलता है।)
P.G. College	04	
Law College	02	
Technical College	04	
Total	**45**	

– पूर्वोत्तर छोड़कर शेष 10 क्षेत्रों के 20 प्रांतों में 34 स्थानों पर महाविद्यालय चलते हैं।

– विद्या भारती की समितियों द्वारा संचालित/संलग्न 38 महाविद्यालय हैं।

– संपर्कित 07 महाविद्यालय हैं।

– 05 स्थानों पर नये महाविद्यालय प्रारंभ होने की प्रक्रिया में है।

– कर्नाटक में 12 एवं अन्य क्षेत्रों में 18 महाविद्यालय संपर्क श्रेणी हेतु प्रस्तावित हैं।

दिनांक–17 दिसंबर, 2016 महाविद्यालयीन शिक्षा बैठक सहभागिता संख्या

1.	केंद्रीय पदाधिकारी विद्या भारती	08
2.	विशेष आमंत्रित सदस्य	05
3.	क्षेत्र एवं प्रांत स्तर पर	17
4.	प्रबंधन से जुड़े	27
5.	प्राचार्य / उपप्राचार्य महाविद्यालय	27
	कुल	84

– उद्घाटन और समापन सहित कुल छः सत्र हुए, दो चर्चा सत्र हुए।

– चर्चा सत्र के विषय– (a) **Quality Education and Skill Development.**

(b) Social Awareness through Education and Involvement of Society in Education.

– रात्रि में भौगोलिक रचना के अनुसार छः समूहों में क्षेत्रशः बैठकें हुईं–

1. मध्य क्षेत्र
2. दक्षिण एवं मध्य क्षेत्र
3. उत्तर–पूर्व एवं पूर्व क्षेत्र
4. राजस्थान एवं उत्तर क्षेत्र
5. पश्चिम क्षेत्र
6. उत्तर प्रदेश

अखिल भारतीय महाविद्यालयीन बैठक (17–18 दिसंबर 2016), राँची

महाविद्यालयीन संख्यात्मक-वृत्त								
क्रम	क्षेत्र	प्रान्त	महाविद्यालय	स्थान	B.Ed.	Degree	Law	Tech.Training
1	दक्षिण	केरल	3	2	1	2	0	0
2	दक्षिण मध्य	आन्ध्रप्रदेश	3	2	0	2	1	0
		गुजरात	7	4	3	2	0	2
3	पश्चिम	गोवा	2	1	1	1	0	0
		महाराष्ट्र	1	1	1	0	0	0
		विदर्भ	2	1	1	1	0	0
4	मध्य क्षेत्र	छत्तीसगढ़	3	2	2	1	0	0
		महाकौशल	2	2	0	1	0	1
		मध्य भारत	5	4	2	3	0	0
		मालवा	3	3	2	1	0	0
5	राजस्थान	जयपुर	1	1	1	0	0	0
6	उत्तर क्षेत्र	हरियाणा	2	1	1	1	0	0
		पंजाब	1	1	0	0	0	1
7	पश्चिम उत्तर क्षेत्र	मेरठ	3	2	1	1	1	0
		ब्रज	2	2	0	2	0	0
8	पूर्वी उत्तर क्षेत्र	कानपुर	1	1	1	0	0	0
9	उत्तर पूर्व क्षेत्र	दक्षिण बिहार	1	1	1	0	0	0
		उत्तर बिहार	1	1	1	0	0	0
		झारखंड	1	1	1	0	0	0
10	पूर्व क्षेत्र	उड़ीसा	1	1	0	1	0	0
11	पूर्वोत्तर क्षेत्र		0	0	0	0	0	0
	योग		45	34	20	19	2	4

उद्घाटन - उद्बोधन

-Inaugual Address-
Dr. Govind Sharma
Hon'ble President
Vidya Bharti Akhil Bhartiya Shiksha Sansthan

डॉ. गोविंद शर्मा
मा. अध्यक्ष
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

आप सभी शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत अनुभवी व्यक्ति हैं। इस नाते वर्तमान शिक्षा और उससे जुड़े परिदृश्य से आप भलीभाँति परिचित हैं। हम सभी जानते हैं कि हमारी शिक्षा व्यवस्था विश्व में तीसरे क्रम पर आती है। चीन और अमेरिका के बाद भारत की शिक्षा व्यवस्था सर्वाधिक व्यापक है, इसके साथ ही हम यह भी जानते हैं कि इस शिक्षा व्यवस्था के सम्मुख आज कई चुनौतियाँ हैं, कई समस्याएँ हैं। शिक्षा प्रणाली से जुड़ी समस्याओं का उल्लेख स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 से लेकर अभी हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016 का जो प्रारूप प्रकाशित हुआ है, उसमें किया गया है। समस्याओं से जुड़े मुद्दे बहुत हैं। उन सब पर समय को देखते हुए पूरा विचार किया जाना संभव

नहीं है पर, फिर भी कुछ समस्याओं अथवा चुनौतियों पर विचार किया जाना आवश्यक है; क्योंकि इन चुनौतियों के कारण जो परिदृश्य विकसित हुआ है, उसने हमारी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था पर विश्वास का संकट पैदा किया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016 के प्रारूप में इस ओर संकेत भी किया गया है। प्रारूप में कहा गया है कि– "The focus of New Education Policy is on improving the quality of Education and restoring the credibility of the Education System."

यह जो गुणवत्ता और विश्वसनीयता का संकट है, वह मूलभूत है जो हमारी चिंता का कारण है। इसके अलावा तीन–चार और कारणों का उल्लेख मैं संक्षेप में करना चाहूँगा।

शिक्षा संस्थाओं के विस्तार के साथ ही शिक्षा की गुणवत्ता सबसे बड़ी चुनौती है। वस्तुतः शिक्षा की गुणवत्ता सापेक्ष है। वह इस बात पर निर्भर है कि शिक्षा वर्तमान समस्याओं का सामना करने के लिए हमें कितना समर्थ बनाती है तथा भविष्य को सामाजिक, राष्ट्रीय और व्यक्तिगत अपेक्षाओं को पूरा करने के संदर्भ में उसकी कितनी उपादेयता है। हमें यह बात समझनी होगी। इस संदर्भ में मैं दो उदाहरण देना चाहता हूँ– पहला, आज 48% कंपनियों को योग्य उम्मीदवार नहीं मिल रहे हैं साथ ही 36% कंपनियाँ जिन कर्मचारियों का चयन करती हैं, उन्हें स्वयं अपने यहाँ अतिरिक्त ट्रेनिंग देकर अपने कार्य के योग्य बनाती हैं। दूसरा, भारत में अमेरिका से 5–6 गुणा अधिक इंजीनियर तथा 10 गुणा अधिक पी.एच.डी. उपाधिधारी निकलते हैं पर इसके बावजूद इनके अकादमिक स्तर से हम सभी परिचित हैं। गुणात्मक शिक्षा अपने यहाँ एक चुनौती है। जाहिर है जो छात्र विश्वविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त कर निकल रहे हैं, वे औसत दर्जे के हैं, पर हमें यह समझना होगा कि आज औसत का जमाना नहीं है। तकनीकी विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस युग में औसत को कोई स्थान नहीं है। टॉमस फ्रीडमैन जो न्यूयॉर्क टाइम्स के स्तंभकार हैं, का कहना है कि "Average is over". वह कहते हैं कि औसत का युग अब समाप्त हो गया है। हम भी अनुभव करते हैं।

एन.आर.नारायण मूर्ति कहते हैं कि औसत योग्यता के लिए जगह नहीं है। आज विशिष्टीकरण का युग है। इसमें हम कहाँ हैं? हाँ, कुछ क्षेत्र हैं जहाँ हमने अपना स्थान बनाया है। अंतरिक्ष विज्ञान का क्षेत्र उनमें से एक है। पर इतना ही पर्याप्त नहीं है, हमें बहुत आगे जाना है।

विश्वविद्यालयों की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। अनेक विश्वविद्यालयों की स्थापना पिछले दशकों में हुई है, आज भी हो रही है, पर क्या विश्वविद्यालय शैक्षणिक दृष्टि से स्तरीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शोध कार्य कर पा रहे हैं? क्या उनमें वह वातावरण है जो एक विश्वविद्यालय में होना चाहिए?

बैंजामिन डिजरायली कहते थे कि विश्वविद्यालय Light, Liberty & Knowledge का स्थान होना चाहिए। विश्वविद्यालय प्रकाश स्तंभ हो, मार्ग बतलाने वाले हो, ज्ञान की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले हो। वहाँ सोच की, चिंतन और मनन की, विचार करने की स्वतंत्रता हो। ऐसा होने पर ही नये ज्ञान का सृजन और संचरण हो सकता है। वस्तुतः विश्वविद्यालय ज्ञान का सृजन करने के स्थल हैं। ऐसा होने पर ही कोई चीज सामने आ सकती है और स्थायी विकास हो सकता

है। ज्ञान का और आर्थिक तथा औद्योगिक विकास का गहरा संबंध है। यदि ज्ञान नहीं, नवाचार नहीं तो आर्थिक विकास नहीं, पर हमारे विश्वविद्यालय इस दिशा में कहाँ हैं?

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत कैरियर बनाने पर जोर है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य छात्र बनाने के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने पर जोर है। आज बाजार की माँग के आधार पर पाठ्यक्रम तैयार किए जाते हैं। आज अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करने पर जोर है। यद्यपि यह बुरा नहीं है तथापि शिक्षा से सामाजिक सरोकार का पक्ष गायब हो रहा है। इसी कारण छात्र अपने कैरियर के प्रति तो चिंतित हैं, अपनी प्रगति के प्रति चिंतित हैं पर सामाजिक सरोकारों के प्रति चिंतित नहीं हैं, सजग नहीं हैं। छात्र में ज्ञान है, तकनीक की जानकारी है परंतु सामाजिक संवेदना नहीं है। कैरियर की दौड़ में गिरे हुए व्यक्ति के ऊपर पैर रखकर भागने के लिए वह तैयार है। सहयोग, सहानुभूति, करुणा, प्रेम सब हाशिए पर जा रहे हैं, पर ये सब गुण व्यक्ति में चाहिए। हृदय पक्ष का भी महत्व है। भावहीन, करुणाहीन, प्रेमहीन मनुष्य का कोई महत्व नहीं है। स्वामी विवेकानंद का कहना है कि मस्तिष्क के साथ हृदय भी चाहिए। सबकुछ बुद्धिपक्ष में ही नहीं है। हृदय पक्ष के विकसित होने की आवश्यकता है। ऐसा पाठ्यक्रम निर्माण करने की आवश्यकता है जिसके कारण छात्र में करुणा, दया, स्नेह, सहयोग, सहानुभूति आदि सद्भाव जागृत हो। तभी सामाजिक दायित्वबोध विकसित होगा। यहाँ उपस्थित शिक्षाविदों में उनकी संख्या अधिक है जो शिक्षक-शिक्षा से जुड़े हैं। थोड़ा शिक्षक-शिक्षा के संबंध में भी विचार करें, इन संस्थानों में जो परिदृश्य विकसित हुआ है, उसे भी समझें। जो शिक्षा महाविद्यालय आज हैं, उनमें से अधिकांश में आधारभूत संरचना का अभाव है, पूर्ण योग्यता प्राप्त योग्य शिक्षक भी नहीं हैं। पुस्तकालय और प्रयोगशाला भी स्तरीय नहीं हैं, शिक्षक शिक्षण के प्रति उदासीन हैं, अत्यधिक शुल्क लेकर प्रवेश दिया जाता है, छात्र उपस्थिति न के बराबर है पर सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर उपाधि प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे महाविद्यालयों को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016 के प्रारूप में 'Degree Shops' अर्थात् 'उपाधि देने वाली दुकानें' कहा गया है।

शिक्षक की स्थिति भी कोई अच्छी नहीं है। वस्तुत: शिक्षक के लिए अध्यापन उसकी वृत्ति है परंतु निरंतर सीखना यह उसका धर्म है पर यह विडम्बना है कि वैज्ञानिक चेतना और ज्ञान की प्रचुरता वाले इस युग में शिक्षक अपने धर्म से ही विमुख हो रहा है। वह नया कुछ सीखना ही नहीं चाहता। वही पुराना ज्ञान वह छात्रों को वर्ष प्रतिवर्ष परोसता जा रहा है। वह नये प्रयोग करने और नवाचार करने के प्रति उदासीन है। परिणामत: उसके ज्ञान में ठहराव आ गया है। वह रूढ़िवादी हो रहा है। ऐसे शिक्षक वस्तुत: स्वयं अपने आपको अप्रासंगिक बना रहे हैं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति सर ऐरिक एशली का कथन था कि 'विश्वविद्यालयों की डिग्रियों का प्रति दस वर्ष बाद नवीनीकरण होना चाहिए।' इस कथन में अन्तर्निहित भाव यह है कि शिक्षक को अपने विषय का अद्यतन ज्ञान होना चाहिए।

आज शिक्षा जगत में यह जो परिदृश्य विकसित हो रहा है, इसे बदलने में हमारी कोई भूमिका है क्या? इस पर विचार करने की आवश्यकता है क्या? क्या हम केवल आलोचना करने

वाले हैं या इसे बदलने के लिए हमारे पास कोई दृष्टि है? ध्यान रखिए, हम भी उस शिक्षा व्यवस्था के भाग हैं जिसकी आलोचना की जाती है। हम उस System के अंग हैं तो क्या हमारे पास इस System को बदलने की कोई कार्ययोजना है? क्या हम उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए नीति निर्माता और संबंधित पक्षों को प्रभावित कर सकते हैं? मुझे लगता है कि हाँ, हम ऐसा कर सकते हैं। हमें आगे बढ़ना होगा। अपनी दृष्टि और वैचारिक सोच के अनुरूप कार्य करने के लिए विविध विषयों की समितियों में, पाठ्यक्रम निर्धारण की समिति में तथा पुस्तक लेखन के क्षेत्र में सक्रिय होना होगा। अध्यापन की नई तकनीक का प्रयोग करना होगा, पर परंपरागत व्याख्यान पद्धति के स्थान पर ग्रुप डिस्कशन, सिम्पोजियम, सेमिनार, बुक रिव्यू आदि पर जोर देना होगा। हमें उदीयमान भारतीय समाज में प्रवाहित अन्तर्धाराओं को समझते हुए राष्ट्रीय बोध और अपनी सांस्कृतिक दृष्टि को स्थापित करना होगा। इसके लिए हमारे पास ज्ञान और अवसरों की कमी नहीं है। हममें क्षमताएँ भी हैं पर उसका पूरा उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि हम जिस मैकाले की आलोचना करते हैं, उसने जिस शिक्षा योजना को लागू किया उसके माध्यम से अंग्रेजियत का विकास हुआ। परिणामत: हमारे देश में बहुत बड़े वर्ग की सोच और जीवन में बदलाव आया। इस बदलाव से हम आज तक प्रभावित हैं। मैकाले के 1834 के कथन को याद कीजिए, जिसमें वह कहता है "We must at present do our best to form a class who may be interpreters between us and the millions and the class will be Indian in blood and colours but English in tastes, in opinions, in morals and in intellect."

जरा इस कथन को समझें। यह ठीक है कि वह अंग्रेजी राज की सुदृढ़ता के लिए भारतीयों का एक वर्ग विकसित करना चाहता था जो भारतीयों और अंग्रेजी शासकों के मध्य बिचौलिए का काम कर सके पर यह भी सही है कि वह शिक्षा के माध्यम से ऐसा वर्ग बनाना चाहता था जिसकी अभिरुचियाँ, विचार अथवा दृष्टिकोण, मूल्य तथा बुद्धि और विवेक अंग्रेजियत से पूर्ण हो। अब जरा सोचिए यदि किसी की अभिरुचियाँ, दृष्टिकोण, जीवन-मूल्य तथा सोच-बुद्धि अंग्रेजियत की होगी तो उस व्यक्ति की जीवन दृष्टि एवं उसकी संस्कृति भी अंग्रेजियत जैसी होगी। ये सब मिलकर ही तो जीवन दृष्टि विकसित करते हैं। वस्तुत: शिक्षा एक माध्यम है जो हमारे जीवन को संस्कारित करती है और हमारी जीवन दृष्टि को बनाती है। आज शिक्षा द्वारा भारतीय अभिरुचि, दृष्टिकोण, जीवनमूल्य और सोच को विकसित करने की आवश्यकता है। इसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण और शिक्षक तीनों की अहं भूमिका है।

हम संख्या की दृष्टि से भले ही कम हों पर शिक्षा क्षेत्र में शिक्षा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता में कमी नहीं है। हमारा मार्ग स्पष्ट है, हमारी दृष्टि स्पष्ट है। हमें क्या करना है, यह भी स्पष्ट है। इसी कारण मुझे विश्वास है कि हम शिक्षा के माध्यम से भारतीय गरिमा और मूल्यों को स्थापित करने में समर्थ हो सकेंगे तथा परिदृश्य को बदल सकेंगे।

ooo

मा. सुरेश जी सोनी, सह सरकार्यवाह जी

का उद्‌बोधन

विद्या भारती के कार्य के काफी वर्ष हो गए हैं। शिशु वाटिका से लेकर 10+2 तक की विकास-यात्रा चली। कुछ स्थानों पर प्रयोगात्मक रूप में महाविद्यालय भी प्रारंभ हुए हैं। भाव-भावना एवं विचार लेकर हम कार्य करते हैं। उच्च शिक्षा में भी नया कुछ करके आगे बढ़ने का हमारा प्रयत्न हो।

केवल अपने महाविद्यालयों का विस्तार करना है, इसकी अपेक्षा शिक्षा के क्षेत्र में अन्य समविचारी संस्थाओं के साथ हमारा संपर्क बने। शिक्षा के क्षेत्र में अपनी बात रखने की एक दृष्टि भी हो। इसके आधार पर आगे की कुछ कार्य-योजना भी बने। महाविद्यालय में आने वाला छात्र कोरी स्लेट जैसा नहीं है। शिक्षा का समाज, देश और व्यक्तियों से संबंध है। अत: देश की स्थिति और समाज की आवश्यकता का विचार करना आवश्यक है। अपना विचार कभी एकांगी न रहा, हम एकांगी हो गए। हमारे देश के मनीषियों, महापुरुषों और साधु-संतों ने जो अच्छी बातें कहीं, उनके अनुसार आज भी हमारे समाज के अंदर संस्कार-विचार है। हमारे देश में परा और अपरा दोनों प्रकार की विद्याओं पर हमेशा से विचार होता आया। परा विद्या और अपरा विद्या जिनको क्रमश: आध्यात्मिक विद्या और भौतिक विद्या कहते हैं, इनका संबंध पूर्व और पश्चिम से भी है। आज पूर्व और पश्चिम दोनों के समन्वय में पूर्णता है। स्वामी विवेकानंद जी ने भी इन दोनों प्रकार की विद्याओं के समन्वय का विचार रखा। साथ ही, विद्या और अविद्या दोनों का विचार हो। दोनों प्रकार के प्रवाहों की अपनी विशेषताएँ हैं। गुण भी हैं और अवगुण भी। विद्या की उपासना से सभी प्रकार के दु:खों से मुक्ति मिलती है।

व्यक्ति को ठीक करना आवश्यक है। व्यक्ति का मन और संस्कार ठीक हो। पद्धति कोई भी हो, पर विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं की विशालता व्यक्ति-व्यक्ति में आवे। पश्चिमी दुनिया ने भौतिकता पर, व्यवस्थाओं पर, संस्थाओं पर और पद्धति पर जोर डाला। सामाजिक व्यवस्था का निर्माण किया। सामाजिक बोध विकसित किया। इन पक्षों को ठीक करने पर बल दिया। हमें भी पश्चिम की इन बातों पर बल देना चाहिए तथा उन अच्छाइयों को अपने यहाँ लाना चाहिए। व्यवस्थाएँ ही संस्थाएँ हैं। अत: system ठीक करना चाहिए। परंतु व्यक्ति की चेतना को विस्तृत किये बिना कुछ नहीं हो सकता। व्यक्ति की चेतना को विस्तृत तथा चित्त को व्यापक करना आवश्यक है।

शिक्षा के सभी विषयों में भारतीयता आनी चाहिए। पश्चिम के लगभग 60-70% परिवार single parent family हैं। परिवार टूटे हैं। भारतीय विचार के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था बननी चाहिए। पाठ्यक्रम, पुस्तक आदि को ठीक करने पर विचार करना चाहिए। शिक्षा में उदात्त जीवन-मूल्यों का समावेश आवश्यक है। विषयों में भारतीयता आना तो क्या आना? इस बात का चिंतन हो। हमें अपने यहाँ की बातों को, विशेषताओं को ठीक से समझना होगा।

विद्या भारती के द्वारा प्रत्यक्ष संस्थाएँ चल रही हैं। जो विचार आये हैं, उनका वर्गीकरण कर क्रियान्वयन के लिए प्रयत्न हो। गुणवत्ता-विकास के लिए कार्य हो। सामाजिक संवेदना एवं कौशल को विकास पर बल देना है। समविचारी संस्थाओं के संचालकों से हमारे संपर्क-संबंध बने। अन्य प्रयोगधर्मी संस्थाएँ भी हैं। उनसे संपर्क बनाना चाहिए। सरकारी संस्थाओं में बदल लाने की सोच है। Specific calendar बने। शिक्षा-तंत्र प्रभावित करने तथा बदलने के प्रयास हो। मौलिक बातें आंतरिक प्रेरणा से होती हैं, system/व्यवस्था से नहीं। हम जैसा चाहते हैं, वैसा बने, इसका प्रयोग हो। अगर किसी व्यवस्था में बदलाव लाना हो तो उसके बारे में अच्छी तरह विचार करना चाहिए। हमें अपने वर्तमान को ठीक करना चाहिए। वर्तमान ठीक हो गया तो भविष्य ठीक ही रहेगा।

भारत का युवा वर्ग सुरक्षा-बोध में जी रहा है। भारतीय युवा में जोखिम लेने का अभाव है। केवल नौकरी करने का मनोभाव वाला नहीं बने, वरन् Job Provider बने। भारत का युवा वर्ग साहसी बने।

अगर किसी व्यवस्था में कभी कोई बदलाव लाना हो तो उसके बारे में अच्छी तरह विचार करना चाहिए। सरकार पर हमारी निर्भरता नहीं हो। सरकार हमारी बातें माने अथवा नहीं, इससे हमारा कार्य प्रभावित नहीं होना चाहिए। शिक्षा-तंत्र की जटिलताओं को समझने का प्रयास होना चाहिए तथा उसे प्रभावित करने का प्रयास हो। इसके लिए हमारी तैयारी हो। मौलिक बातें आंतरिक प्रेरणा से होती हैं। कार्य के प्रति निष्ठा और लगाव से होती हैं। हम अच्छा model तैयार करें।

शोध, प्रशिक्षण आदि model हो। देश के सभी शिक्षाविद् मिलकर विचार करे। हमारा जो भी model बने, वह पूर्व और पश्चिम का समन्वय हो। तभी हम अच्छा कर पाएँगे। गुणवत्ता के लिए एकाग्रता की आवश्यकता है। आधारभूत परिवर्तन लाना है तो इसके लिए ठीक से विचार व योजना करने की आवश्यकता है। इसके लिए आवश्यक संसाधन और व्यवस्था का विचार करें। सामाजिक दायित्वबोध का कैसे निर्माण हो, इसका भी विचार करना आवश्यक है। समय के साथ-साथ सोच में समझदारी का निर्माण होता है। विज्ञान और तकनीक के साथ मानवता का भी विकास हो।

ooo

क्षेत्रशः कार्य-योजना पर विचार

क्षेत्रशः छः समूहों की रचना कर महाविद्यालयी शिक्षा की दृष्टि से कार्ययोजना पर विचार किया गया। इन बैठकों में निम्नलिखित सुझाव आए–

1. नर्सिंग कॉलेज की स्थापना की जानी चाहिए। पत्रकारिता महाविद्यालय तथा शारीरिक शिक्षा के भी महाविद्यालय प्रारंभ होने चाहिए।
2. महाविद्यालय की एक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन आवश्यक है।
3. प्रत्येक प्रांत में B.Ed. एवं D.Ed. महाविद्यालय की स्थापना हो।
4. क्षेत्र/प्रांत स्तर महाविद्यालय शिक्षा की कार्यशाला हो।
5. अपने द्वारा प्रारंभ किए गए महाविद्यालयों में अपने विद्यालयों में कार्यरत आचार्यों के

नामांकन की सुविधा हो। महाविद्यालय प्रारंभ करने की दिशा में प्रयास हो।

6. महाविद्यालय का आकर्षक फोल्डर बने। अपने विद्यालय के विद्यार्थियों के placement का प्रयास हो।
7. महाविद्यालयों में NSS/NCC की गतिविधियाँ चलाई जाए।
8. विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए।
9. अपने महाविद्यालयों की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता आवश्यक है।
10. महाविद्यालय में कौशल विकास के कार्यक्रम चलाए जाएँ।
11. शिक्षा क्षेत्र के प्रबंधन में गीता श्लोक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इसे प्रयोग में लाना चाहिए।
12. महाविद्यालयों को आधुनिक सुविधाओं से युक्त करना चाहिए।
13. अपने विद्यालय में education, research और training का समन्वय हो।
14. समाज के अंतिम व्यक्ति तक उच्च शिक्षा पहुँचाने के लिए हम कृत-संकल्पित हों।
15. शासन परिवर्तनशील है तथा समाज स्थायी है। इसलिए सामाजिक सहयोग बढ़ाते हुए अपने संस्थान का संचालन हो।
16. प्रदेश या क्षेत्र स्तर पर महाविद्यालय, तकनीकी संस्थान, प्रबंधन संस्थान आदि की स्थापना हो जानकारियों के लिए सूचना केंद्र स्थापित किया जाना चाहिए।
17. विद्या भारती वेबसाइट पर महाविद्यालयीन शिक्षा से संबंधित सभी जानकारियों को डाला जाए तथा सदैव अद्यतन रखने का प्रयास हो।
18. सभी संस्थाएँ एक-दूसरे के संपर्क में रहे ताकि महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का आदान-प्रदान सरल, सहज रूप में हो सके। इस कार्य को सुचारु रूप से करने के लिए सभी महाविद्यालयों को एक user I.D. और password वेबसाइट हेतु उपलब्ध कराया जाना चाहिए जिससे वे सभी कार्यक्रम, सुझाव, अन्य आवश्यक बात पहुँचा सके।
19. मेडिकल कॉलेज खुलना चाहिए।
20. B.Ed. के पाठ्यक्रम में विदेशी शिक्षाशास्त्रियों को सम्मिलित किया गया, परंतु भारतीय मनीषियों और शिक्षाशास्त्रियों को शामिल नहीं किया गया है।
21. विकास के आयाम हैं– शिक्षा, शोध और प्रशिक्षण।
22. राज्य स्तर पर विश्वविद्यालय की स्थापना हो।
23. राष्ट्रीय स्तर पर विद्या भारती का एक दूरदर्शन चैनल हो।
24. प्रत्येक जिले में उच्च शिक्षा से संबंधित कोई संस्था है, उसके लिए हम दो प्रकार से प्रयास कर सकते हैं–(क) जो महाविद्यालय समविचारी संगठनों/ व्यक्तियों द्वारा चलते हैं, उनको संपर्क में लाकर। (ख) स्वयंसेवकों को नए महाविद्यालय प्रारंभ करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए।
25. अपना पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, विषय और विचार को लागू करने के लिए प्रत्येक राज्य में एक विश्वविद्यालय हो।
26. गुणवत्ता और विचार के विकास हेतु हमें self-finance colleges को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

ooo

शिक्षा में समाज की सहभागिता तथा शिक्षा से सामाजिक जागरूकता

उपर्युक्त विषय पर चार समूहों में बँटकर चर्चा हुई।

समूह– 1

अध्यक्षता– डॉ. गोविंद शर्मा, अध्यक्ष, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

संयोजक – श्री दिलीप बेतकेकर, उपाध्यक्ष, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

1. प्रारंभ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री दिलीप बेतकेकर जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के दो दायित्व हैं- प्रथम तो उनका संबंध शिक्षा से होता है और दूसरा बच्चों से। मूल्यपरक शिक्षा के लिए अपनत्व सबसे महत्त्वपूर्ण है। विद्यालय गाँव से जुड़ा है। गाँव और विद्यालय का जुड़ना महत्त्वपूर्ण है।
2. Involvement of society in education is important. The involvement is to be increased.
3. The social apathy for education should be recovered.
4. Social awareness by educations is very important.
5. श्री आशीष जी– Amrit Varsha Mahotsava, Astifeva, Anti Tobacco Driver etc. are playing an important role in social awareness.
6. श्री सचिन जोशी– अकोला के निकट स्वच्छ भारत अभियान, जनजागरण आदि कार्यक्रम चलाए गए जिनकी ग्रामीणों ने काफी प्रशंसा की। Grand Parents के द्वारा वृक्षारोपण कराया गया तथा विद्यार्थियों ने इन वृक्षों की देख-रेख का दायित्व लिया।
7. श्री दादारण जी धावन– विद्यार्थियों को पौधारोपण के लिए पौधे दिए जाते हैं।
8. श्री दादा कोजाले– गाँव को गोद-लेकर विकसित करने का उदाहरण प्रस्तुत किया।
9. श्री रणछोड़ भाई– शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने में विद्या भारती गुजरात में सहयोग देती है।
10. Sri Chirag Swami–The students who are not admitted in good schools, they are provided special coaching by college students through activities.
11. Dhawnish Mehta– Colleges run tree plantation programme. The society is involved in development.
12. श्री प्रशांत चौधरी– What can be done for getting society involved?
    - NGO tie up. -Bank tie up
    - Weekly market -Ask for time of donations
    - Common funding

CONCLUSIONS-

1- There is no society where there is no education. Every society has its own social and educational values.

2- Social values can be inculcated only through educational values and educational values can be inculcated through social values.

3- Education and society are most related and indivisible.

4- Society without education cannot develop. Education without the involvement of society is useless.

समूह–2

इस समूह में निम्नलिखित सुझाव व विचार आए–

1. घरेलू हिंसा रोकने में हमारी महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।
2. स्वच्छता अभियान में समाज की सहभागिता हो सकती है।
3. गाँवों में NCC के माध्यम से सेवा के अनेक कार्य किए जा सकते हैं।
4. महाविद्यालय द्वारा गाँव को गोद लेकर गाँव के बहुमुखी विकास का प्रयत्न किया जा सकता है।
5. वृक्षारोपण कर पर्यावरण-सुरक्षा के लिए कार्य हो रहा है।
6. कॉलेज के वंदना सत्र में अभिभावकों को बुलाना चाहिए।
7. महाविद्यालय में योग शिविर का आयोजन करना तथा Blood Donation Camp लगाना।
8. नि:शुल्क सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का आयोजन करना।
9. अपने कार्यक्रमों में अन्य संस्थाओं के संचालकों/प्रमुखों को आमंत्रित करना।
10. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ तथा भ्रूण हत्या रोकने हेतु जागरुकता अभियान चलाकर समाज के हित में कार्य करना।
11. शारदा विहार, भोपाल के 13 संस्कार केंद्र/संचालित हैं। भोपाल के सभी चौराहों की सफाई में संस्था का महत्त्वपूर्ण सहयोग है।
12. नशामुक्ति हेतु जागरुकता पैदा करना। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से अनेक ज्वलंत व उपयोगी विषयों को समाज के सम्मुख लाया जा सकता है।
13. स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करना।
14. पॉलीथीन मुक्त परिसर बनाना तथा समाज में भी इस दृष्टि से जागरुकता पैदा करना।
15. कौशल विकास की दृष्टि से छात्रों को प्रोत्साहित करना तथा रविवार को कार्यशाला का आयोजन करना।
16. खराब से खराब स्थिति में भी हम सकारात्मक कार्य करें।
17. संस्थान के कार्यक्रमों की वार्षिक कार्य-योजना बननी चाहिए।
18. व्यक्तिगत संबंध आदर्श पर आधारित हो।

समूह–3

अध्यक्षता – डॉ. के.जी. सिंह, कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

विषय प्रवर्तन – डॉ. रेणु माथुर, राष्ट्रीय संयोजिका, महाविद्यालयीन शिक्षा

विषय प्रवर्तन – डॉ. रेणु माथुर ने किया तथा इस समूह में सम्मिलित महानुभावों ने अपने विचार निम्नवत् रखे–

1. समाज के सहयोग से शिक्षा जगत में अनेक संगठन, संस्थाएँ व विश्वविद्यालय कार्यरत हैं। विद्या भारती भी समाज के सहयोग से ही कार्य कर रही है।
2. संस्कार केंद्र के माध्यम से साक्षरता की दृष्टि से अच्छा प्रयास हो रहा है।
3. अनेक प्रचलित कुप्रथाओं को दूर करने में महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
4. खुले में शौच से होने वाली क्षति के बारे में समझाना तथा शौचालय निर्माण हेतु प्रोत्साहित करना। इसी प्रकार सामाजिक स्वच्छता में महाविद्यालय का महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है।
5. पर्यावरण-संरक्षण के प्रति जागरूक करना।
6. प्राथमिक चिकित्सा की जानकारी देना।
7. न्यायिक नियमों से अवगत कराना तथा जागरुक बनाना।
8. शिक्षा के द्वारा समाज को समाज के प्रति संवेदनशील बनाकर सेवाकार्य में सहभागी बनाने हेतु प्रयास करना।

समूह–4

विषय– विद्यालय सामाजिक चेतना का केंद्र, शिक्षा से सामाजिक जागरण एवं शिक्षा में समाज की सहभागिता।

प्रस्तावित भाषण अध्यक्ष डॉ. नन्द कुमार इन्दु जी के द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने विषय प्रवेश कराकर सभी महानुभावों से विचार प्रकट करने का आग्रह किया। उसमें अनेक विचार आए–

1. **श्री राजीव कमल बिट्टू–** शिक्षक, छात्र और विद्यालय के बीच समन्वय बनाकर विद्यालय को सामाजिक चेतना का केंद्र बनाया जा सकता है जिसके लिए अभिभावक संपर्क एवं विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति का गठन एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
2. **श्री फूल सिंह–** औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों ही तरीकों से हमें सामाजिक चेतना के विकास का कार्य करना चाहिए। इसके लिए हम स्थानीय स्तर पर सर्वे करके तदनुरूप समाज शिक्षण का कार्य कर सकते हैं। अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों का विस्तार हो।
3. **डॉ. रामकेश पाण्डेय–** शिक्षक, शिक्षार्थी और समाज शिक्षा के तीन ध्रुव हैं जिसमें समन्वय स्थापित करना आवश्यक है तभी विद्यालय समाज में अपने को स्थापित कर सकेगा तथा समाज की सहभागिता शिक्षा में हो सकेगी।
4. **श्री दिलीप कुमार झा–** हमारे विद्यालयों व महाविद्यालयों का दोहरा दायित्व है। प्रथम

छात्रों का शैक्षणिक विकास करना तथा दूसरा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना। छात्रों के माध्यम से अभिभावकों तक पहुँच बनाकर गोष्ठी, सम्मेलन, संपर्क आदि गतिविधियों के माध्यम से उनमें सामाजिक चेतना और दायित्व का विकास करना। हमारी वंदना सभा समाज को जोड़ने का सशक्त माध्यम है। विद्यालय सामाजिक गतिविधियों का केंद्र है। पर्यावरण-संरक्षण, सामाजिक स्वच्छता, सामाजिक सुरक्षा, जल-संरक्षण आदि की दृष्टि से विद्यालय के माध्यम से उपयोगी व परिणामकारी गतिविधियाँ चलाई जा सकती हैं। आज के समय में cashless transactions की दृष्टि से हमारे संस्थान सकारात्मक वातावरण के निर्माण एवं प्रशिक्षण देने में अच्छी भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। गरीब बच्चों को शिक्षा में सहयोग करना चाहिए।

5. **डॉ. अजीत पाण्डेय–** आवश्यकता और आविष्कार में घनिष्ठ संबंध है। इसलिए हमें सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हमें गतिविधियाँ चलानी चाहिए। अन्य संस्थाओं से भी हमारा संपर्क व संवाद हो।
6. **श्री रामकृष्ण राव–** आज लोग अपना सर्वस्व व्यय कर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना चाहते हैं। हम अच्छी शिक्षा देकर समाज को अपनी ओर खींच सकते हैं। समाज में हमारी स्वीकार्यता बढ़ेगी।
7. **श्री नन्द राजन जी–** आज व्यापार करने वालों से हमारी तुलना की जाती है। परंतु हम सामाजिक सहयोग से अपनी एक अलग छवि बनाए रखें ताकि समाज में प्रतिष्ठाणित हो सके।
8. **डॉ. दीप्तांशु भाष्कर–** महाविद्यालयों को समाज की वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु कार्य करना चाहिए। साथ ही, भावी समस्याओं के प्रति समाज को जागरुक करना चाहिए तथा हमें समस्याओं का समाधान खोजने में दार्शनिक भूमिका का निर्वहन करना चाहिए।
9. **डॉ. मधुसूदन झा–** NCC आदि के द्वारा दिए गए सामाजिक कार्यों के द्वारा भी विद्यालय को सामाजिक चेतना का केंद्र बनाया जा सकता है।
10. **प्रो. विश्वनाथन–** विद्या भारती सामाजिक सहयोग से ही कार्य कर रही है। अत: समाज के विकास में हमारा योगदान हो।

अंत में प्रो. नन्द कुमार इन्दु जी ने अपने कार्यों को और समाजोपयोगी बनाने का विचार रखा। उन्होंने कहा कि चीन की तरह हमें भी each one, teach one का संकल्प लेना चाहिए।

ooo

We want the education by which character is formed, stength of mind is increased, intellect is expanded and by which one can stand one's own feet.
--Swami Vivekanand

समूहशः चर्चा

दिनांक
17.12.2016 द्वितीय सत्र

विषय—गुणात्मक शिक्षा एवं कौशल विकास
(Quality Education And Skill Development)

समूह क्रमांक-1 : शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय समूह

अध्यक्षता – प्रो. बद्रीलाल चौधरी, पूर्व अध्यक्ष, चितौड़ प्रांत

प्रवर्त्तक – श्री रमेन्द्र राय, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, विद्या भारती अ.भा.शिक्षा संस्थान

उपस्थित सभी वक्ताओं के परिचय के पश्चात् विषय प्रवर्त्तक श्री रमेन्द्र राय जी ने विषय प्रवेश कराते हुए कहा कि शिक्षण में गुणात्मक विकास से हमारा अभिप्राय सर्वांगीण विकास से है जिसमें छात्र संतुष्टि से लेकर सृजन तक का कार्य अपेक्षित है। जब तक हमसे शिक्षित बालक समाजोपयोगी और सर्जक नहीं होगा, हम उसे गुणात्मक नहीं मान सकते। इस सत्र में ज्ञान के सभी पक्षों के विकास के लिए विचार अपेक्षित है।

तत्पश्चात् मा. अध्यक्ष जी ने विषय विस्तार करते हुए कहा कि जिस प्रकार विद्या भारती ने विद्यालयीय शिक्षा में अपनी अलग पहचान बनाई है, क्या उसी प्रकार महाविद्यालयीय शिक्षा में भी एक उत्कृष्ट पहचान बनायी जानी चाहिए? हमारी शिक्षा का उद्देश्य केवल भीड़ बढ़ाना न हो अपितु स्वतः स्फूर्त और समर्थ नागरिक निर्माण होना चाहिए। हमारे छात्र शिक्षोपरांत क्या करे? वे दिग्भ्रमित न हो अपितु स्वयं मार्ग-निर्माण करने वाले हो। यथा- एम.बी.ए. कर नौकरी करे या स्वयं का उद्योग- डेयरी, गो-मूत्र, कृषि कर अपनी पहचान बनावें। स्थान के अनुसार अलग शिक्षा हो जिससे उन्हें रोजगार मिले और वो पथभ्रष्ट न हो।

क्रमशः चर्चा को आगे बढ़ाते हुए श्री राजेश गुप्ता (मुरैना) ने कहा कि शिक्षा में वर्तमान समस्याओं का समाधान खोजना जरूरी है।

आगे डॉ. रामकेश पाण्डेय जी ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में ही नया मार्ग निकालना होगा। कौशल और रोजगार को जोड़ना होगा। जैसे- दीप निर्माण प्रतियोगिता- गाँवों में विक्रय और रोजगार। साथ ही, उन्होंने कहा कि हमें रक्त-दानादि सामाजिक कार्य भी करना चाहिए। गाँवों का सर्वे कर उनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

चर्चा में आगे बढ़ाते हुए श्री दिलीप कुमार झा ने गुणात्मक शिक्षा के विषय में विद्या भारती के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया कि गुणात्मक शिक्षा अर्थात् मात्र अंक प्राप्ति नहीं, संस्कार भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि सरकारी पाठ्यक्रम और नियमावली के अन्तर्गत अपने महाविद्यालयों में संस्कारयुक्त कार्यों में कठिनाई होती है। अतः पाठ्यचर्या निर्माण से लेकर सभी जगहों पर हमें कार्य करने की आवश्यकता है।

श्री कृष्ण दयाल जी ने कहा कि सम्बद्धता प्रदान करने वाले संस्थान कार्य में बाधक बनते

हैं। अत: हमें उसका समाधान करना चाहिए। इसी प्रसंग में श्री कृष्ण कुमार शर्मा जी ने कहा कि चाहे जो परिस्थिति हो हमें दबाव के बिना कार्य करना चाहिए, परिणाम निश्चित ही प्राप्त होगा साथ ही, अच्छे प्राध्यापक चाहिए जिसके लिए निरंतर प्रयत्न होना चाहिए।

क्रमश: मनोहर सोलंकी जी का विचार आया कि गाँवों को गोद लेकर उनको विकसित करना चाहिए।

अन्य वक्ताओं ने विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम और विद्या भारती कार्यशैली व समन्वय की बात की। छात्रों की अनुपस्थिति और शैक्षिक अरुचि की भी बात की।

श्री राजीव जी हरियाणा के विचारों में हमें पूर्व की योजना में ही सुधार कर लक्ष्य केंद्रित कार्य करना चाहिए। यथा- प्रथम वर्ष- जागरुकता, द्वितीय वर्ष- परिवर्तन, तृतीय वर्ष- आदत आदि लक्ष्य हो।

इसी प्रयोग को आगे बढ़ाते हुए निशा महाराणा जी का कहना था कि छात्र में क्षमता के अनुकूल ही कौशल विकास पर बल देना चाहिए। छात्र हमारा अनुकरण करते हैं; अत: प्रथमत: हमें ध्यान देना चाहिए।

श्री इन्द्रपाल सिंह का कहना था कि अध्यापक अपना कार्य ईमानदारी से करे तो सभी कार्य सहज संभव है। महाविद्यालय पुस्तकालय के साथ अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया का पालन करे तो अच्छे अध्यापकों का निर्माण स्वत: होगा।

छात्राध्यापकों के रोजगार के लिए आदर्श कोचिंग सेंटर, संस्कार केंद्र, सिद्धता परीक्षा, मार्गदर्शन कार्यशाला आदि संचालन के विचार आये।

श्री दिलीप जी बेतकेकर ने कहा कि हमें B.A.B.Ed., B.Sc.B.Ed. चार वर्षीय पाठ्यक्रम पर ज्यादा बल देना चाहिए। साथ ही छात्राध्यापक को केवल छात्र मानना उचित नहीं है। हमें छात्राध्यापकों में संवाद कौशल और भाषण कौशल के विकास पर बल देना चाहिए।

अंत में अध्यक्ष जी ने सभी के विचार सुनने के पश्चात् प्रमुखत: चार प्रस्ताव रखे-

1. विद्या भारती का राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वतंत्र बोर्ड होना चाहिए।
2. सभी राज्यों में एक आदर्श महाविद्यालय की स्थापना हो अथवा वर्तमान के महाविद्यालयों को उस प्रकार विकसित किया जाए।
3. विद्या भारती के द्वारा राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना हो जहाँ से संपूर्ण भारत में औपचारिक और अनौपचारिक दूरस्थ शिक्षा की व्यवस्था हो।
4. सभी प्रकार के आचार्यों/प्राचार्यों के प्रशिक्षणार्थ महाविद्यालय की स्थापना हो।

उपस्थित सभी सदस्यों ने 'ऊँ' के उच्चारण से सभी प्रस्तावों का समर्थन किया।

Anyone who stops learning is old whether at twenty or eighty. Anyone keeps learning stays young.

--Anonymous

समूहशः चर्चा (समूह क्रमांक-2)

अध्यक्षता – प्रो. कपिलदेव मिश्र **प्रवर्त्तक – श्री ओम प्रकाश जी**

1. मा. ओमप्रकाश जी ने गुणात्मक शिक्षा एवं कौशल विकास की संकल्पना रखते हुए चर्चा की शुरुआत की।
2. सभी सदस्यों ने अपने विचार रखे।
3. कॉलेज शुरु करने में कुछ प्रशासनिक एवं विधिक कठिनाइयों का उल्लेख किया।
4. यह भी चर्चा का विषय रहा कि शिक्षकों की गुणवत्ता, विद्यार्थियों की उपस्थिति के लिए महत्त्वपूर्ण घटक है।
5. शिक्षा की गुणवत्ता का सरल संबंध विद्यार्थियों की भाषा और भाषा के ज्ञान से है।
6. मूल्य आधारित शिक्षा जो आज के व्यावहारिक शिक्षा में सम्मिलित नहीं है, उसे लाना पड़ेगा और जब तक हम अपने भारतीय विज्ञान को जो संस्कृत भाषा में संचित है, उसे अपनी मातृभाषा में बच्चों को नहीं सिखाते तब तक हम अपनी अगली पीढ़ी में राष्ट्र गौरव का भाव नहीं भर सकते।
7. आर.एस.एस. के विभिन्न आयामों को वर्तमान पाठ्यक्रम से जोड़कर Integrated Model तैयार करके सामाजिक और मानवीय मूल्यों को विकसित किया जा सकता है।
8. भारतीय परंपराओं और मूल्य आधारित पाठ्यक्रम को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर तक्षशिला और नालंदा जैसा पूरे विश्व के लिए Role Model बनने वाला भारतीय विश्वविद्यालय का निर्माण हो।
9. विज्ञान, ज्योतिष, अध्यात्म, गणित आदि विषयों का ज्ञान जो संस्कृत में है, उसे प्रादेशिक भाषाओं में अनुवादित करके प्रादेशिक भाषा को ज्ञान की भाषा बनाना होगा।
10. शिक्षक छात्र अनुपात भी गुणात्मक शिक्षा के मार्ग में एक बड़ी रुकावट है।
11. शासकीय व अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों में शिक्षकों के ज्यादातर पद रिक्त होने के कारण गुणात्मक शिक्षा प्रभावित हो रही है।
12. पुस्तकों की जगह छात्र Shortcut तरीका अपनाते हुए गाइड या नोट्स का सहारा ले रहे हैं। इसका असर उनकी सृजनात्मकता पर पड़ रहा है। इसका उपाय यह है कि परीक्षा पद्धति में बदलाव लाकर एवं शिक्षण पद्धति को Case Study जैसा बनाकर ठीक किया जा सकता है।
13. Earn While You Learn योजना के आधार पर गुणात्मक विकास और सूचना प्रौद्योगिकी से संबंध जो कि कौशल विकास में सहायक होगा।
14. National Skill Development Cell (NSDC) के तहत 1389 कार्यक्रम हैं जिसमें कौशल विकास को बढ़ावा दिया गया है जिसे अनिवार्य रूप से स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर लागू करना चाहिए।
15. छात्रों का समुचित मार्गदर्शन हाईस्कूल पश्चात् ही करना चाहिए।

ooo

समूहशः चर्चा

समूह क्रमांक-3 : टेक्नोलॉजी, कृषि विज्ञान एवं प्रबंधन

अध्यक्षता– श्री अतुल कोठारी, सचिव, संस्कृति शिक्षा उत्थान न्यास

प्रवर्त्तक – डॉ. सी.सी. त्रिपाठी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

1. पठन-पाठन एवं मूल्यांकन का आधार छात्रों की अपेक्षित गुणवत्ता हो।
2. शिक्षक विकास हेतु विषय आधारित प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन होना चाहिए।
3. शिक्षकों को नवीन तकनीकी का पूर्ण ज्ञान, योजनाबद्ध तरीके से दिया जाय तथा प्रयोगात्मक ज्ञान पर जोर दिया जाए।
4. रोजगार परक विषयों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
5. शिक्षण प्रक्रिया के अंतर्गत प्रतिपुष्टि के साथ-साथ शिक्षक तथा छात्रों के बीच सतत वार्ता तथा समस्या निराकरण का सुझाव शोध के आधार पर होना चाहिए। इसमें छात्रों की पूर्णतया सहभागिता हो।
6. प्रशिक्षण के साथ-साथ Moral तथा संवेदना अति आवश्यक है।
7. भारतीय परंपराओं और मूल्य आधारित पाठ्यक्रम को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर शिक्षा दी जाए।
8. महाविद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिये विद्यालय शिक्षा पर भी ध्यान देना अति आवश्यक है।
9. विद्यालय स्तर पर कौशल विकास विषय पर कार्यक्रम का समावेश होना श्रेयस्कर होगा।
10. Univercity Industry Interaction Cell स्थापित किया जाना चाहिए।

ooo

समूहशः चर्चा रिपोर्ट (संक्षिप्त)

1. महाविद्यालय में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के स्वरूप पर चर्चा की गई।
2. उच्च शिक्षा को विद्या भारती के निर्देशन में कैसे बढ़ाया जाय, इस पर चर्चा हुई।
3. महाविद्यालय खोलने की योजना तथा वह कैसे आदर्श महाविद्यालय बन सकता है? हम क्या अलग करें जिससे यह प्रतीत हो कि विद्या भारती का महाविद्यालय है। भविष्य में योजना के लिये उत्तर प्रदेश क्षेत्र के शिक्षाविद् एवं प्रबंधक वर्ग ने अपने-अपने विचार दिये कि आदर्श महाविद्यालय कैसा हो।
4. प्रदेश में विद्या भारती का अपना एक विश्वविद्यालय हो जो शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार कर सके तथा अपनी योजना को मूर्त्त रूप दिया जा सके। इसका अधिकतर सदस्यों ने समर्थन किया।

5. कुछ सदस्यों ने शिक्षा के व्यावसायीकरण का जिक्र किया तथा नकल की समस्या तथा उसके दुष्प्रभाव का आकलन किया।

7. हमारे महाविद्यालय में एक Social Responsibility Cell बनाने पर जोर दिया गया।

8. विद्या भारती की महाविद्यालयी स्तर पर एक विस्तृत कार्ययोजना बनाने पर बल दिया गया तथा हमारा विद्या भारती का महाविद्यालय औरों से अलग क्या हो सकता है, इस पर विचार किया गया तथा निम्न सुझाव दिये गये–

(क) English Speaking Classes चलाए जाएँ।

(ख) Personality Development Class चलायी जाए।

(ग) Xth के बाद Inter Course कृषि महाविद्यालय में शुरु किये जाएँ।

(घ) Intergrated Course से Job-Oriented विद्यार्थी तैयार होंगे तथा समाज के काम आयेंगे।

(ङ) कौशल विकास योजना को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। जैसे– अगर कोई अशिक्षित मजदूर है या कोई विद्यार्थी पढ़ने में बहुत कमजोर है, उसकी अभिरुचि का पता लगाकर उसको अभिरुचि अनुसार कार्य में दक्ष करके प्रमाण पत्र दिया जाय तथा उसे प्रयोगात्मक रूप से दक्ष कर योग्य बनाया जाये ताकि वह अपना रोजगार स्वयं कर सके या प्राप्त कर सके।

(च) शिक्षक को Career Counsellor भी होना चाहिये तथा Counselling cells स्थापित किये जाएँ।

(छ) Women Cell बनाने पर जोर दिया गया।

(ज) महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षार्थी समाज से जुड़े तथा आस-पास के क्षेत्र के लोगों से मिलकर सभी त्योहारों के महत्त्व को समझाने तथा ऐसे त्योहार जो शिक्षा देते हैं, उनकी उपयोगिता को समझाएँ।

(झ) जिस क्षेत्र में महाविद्यालय हो, वहाँ के विद्वत् लोगों को महाविद्यालय में आमंत्रित करें तथा वे अनुभव हमारे विद्यार्थियों से शेयर कर सके।

(ञ) स्थानीय स्तर की आवश्यकताओं को, पिछड़े क्षेत्र को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम में शामिल करें।

(ट) पिछड़े क्षेत्रों में वहाँ के लोगों की संस्कृति के अनुरूप कुछ ऐसे कार्य करें जिनमें वहाँ के लोगों की पूर्ण सहभागिता हो जिससे वह शिक्षा का महत्व समझ सके तथा सरकार की योजनाओं को समझाया जा सके।

(ठ) शिक्षा क्षेत्र में नये-नये अविष्कार हो रहे हैं, उनको भी शिक्षक अपने पाठ्यक्रम में शामिल करें।

3- Technology is not only a part of engineering studies, It is to be taught with all streams.

4- "Life Long Learning," "Life Skill" and "Spirituality in Business and Life" are very important and all these programs should be introduced for all streams as a regular curricular.

5- Knowledge orientation with urge should be inculcated during UG programs this can be introduced through case studies and project based learning.

6- It is a high time to change the teaching methodologies in higher education, change of relationship from teacher-student to facilitator-learner.

7- Consistent communication, Transparency with technology, Joint Learning of Learners and facilitators, Industry interface and spirituality in thoughts should be the 5 important for the further development of Higher Education.

8- Research is not an only attempt of professors and master degree holders. Research is an Attitude, Aptitude, Value. Swami Vivekanand Pointed out that education is incomplete without research value inculcation.

9- Higher Education is always taken as a way to earn more and more money and money brings happiness. It is a need of time to change this social thinking that happiness brings money.

10- Hindu Philosophy has its depth in all streams, but unfortunately it is not taught in colleges. It should be one of the important aspects of education.

There are many more small points, but I have tried to sum up them in 10 points. Please give me your feedback on these points.

– आशिष मुकुंद पुराणिक

One who wants success in his undertaking should honour and consult the following : a man of experience, a man of knowledge, a man of wisdom, a man of virtue and a reliable friend.

--The Mahabharat

(ड) शैक्षिक भ्रमण अनिवार्य किया जाये ताकि वह विषय आधारित शैक्षिक भ्रमण हो जिससे वह ज्ञान प्राप्त कर सके।

(ण) शैक्षिक भ्रमण पर विषय आधारित एक विशेष कार्य-योजना तैयार की जाय।

Tutorial Ward Group बनाए जायें। हम अपने शिक्षकों में अपने विद्यार्थियों को बाँट दें ताकि शिक्षक उन विद्यार्थियों की विषय संबंधी समस्याओं का निदान कर सके।

इसके अलावे महाविद्यालय के लिये समाज के लोगों का सहयोग लिया जाये ताकि समाज भूमि दान, आर्थिक सहायता तथा अन्य तरह की सहायता के लिये प्रेरित हो सके और समाज के सहयोग से हमारा विद्या भारती का महाविद्यालय एक आदर्श महाविद्यालय एवं गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने वाला बन सके।

ooo

Skill Development : Interdisciplinary Approach

Adamiya Prakash Chandra ji,
Sadar Pranam.

Higher education sector is growing in India in western direction whereas westem education is trending to Hindu ways of education. It is fortunate that Vidya Bharati Akhil Bharatiya Shiksha Sansthan thinks positively about higher education and feels to involve in it for the betterment of the education system of India.

As per our telephonic discussion and your instructions, I discussed with 3 to 4 principals in Pune about interdisciplinary approach in higher education and the thoughts provoked some important points for consideration in Interdisciplinary approach in education.

1- Essentially Higher education should be "JACK OF ALL and MASTER OF ONE." The streams (i.e. Medical, Engineering, Management, Commerce, Arts, Science, Law etc.) are interconnected and need each other support for application of any theory. Currently this approach seems to be lagging in higher education.

2- The skills required for business development, holistic approach, honesty, devotional efforts, sustainable development etc are to be inculcated among the learners.

अखिल भारतीय महाविद्यालयीन शिक्षा बैठक (17–18 दिसंबर 2016), राँची

प्रतिभागी सूची [List of Participants]

क्रम	क्षेत्र का नाम	नाम	दायित्व/पद	स्थान/प्रांत	दूरभाष	ई-मेल
1	उत्तर	मा. जे. एम. काशीपति	संगठन मंत्री	विद्या भारती	9650339090	kashipathijm@yahoo.on
2	उत्तर	मा. अतुल कोठारी	विशेष आमंत्रित	दिल्ली	9212385844	atulssun@gmail.com
3	उत्तर	श्री राजीव जी उप्पल	सचिव	ऊँझाना मंडी	9215755959	rajiv.uppal70@gmail.com
4	उत्तर	श्रीमती बीना बम्बौरिया	प्राचार्य	ऊँझाना मंडी	9812396670	vbamboria6670@gmail.com
5	उत्तर	श्रीमती सरोज कुमारी कक्कड़	प्राचार्य	ऊँझाना मंडी	9896993889	
6	उत्तर	श्री धर्मवीर सिंह	प्राचार्य	ऊँझाना मंडी	9416618175	dsdtssss@gmail.com
7	उत्तर	श्री के.पी. सिंह	कुलपति	हिसार कृ.वि.वि.	9412632572	kps.manager.ppj@gmail.com
8	उत्तर	श्री सी.सी. त्रिपाठी	निदेशक	इंजिनियरिंग कॉ. कुरुक्षेत्र		
9	उत्तर	श्री चन्द्रमोहन जी	प्राध्यापक	धर्मशाला, हिमाचल	9816204444	parsheera@gmail.com
10	उत्तर	श्री विजय मारू	विद्या भारती	दिल्ली		
11	उत्तर	डा. चंद्रमोहन जी	प्रांतीय प्रतिनिधि	शिमला	9816204444	
12	प.उ. प्रदेश	श्री इन्द्रपाल जी	विभागाध्यक्ष	शिकारपुर, बुलंदशहर, मेरठ	9627888512	indrapalsinghbsr001@gmail.com
13	प.उ. प्रदेश	श्री चंद्रपाल जी	प्रबंधन	शिकारपुर, बुलंदशहर, मेरठ	9412458738 8954721991	
14	प.उ. प्रदेश	श्री भीम सिंह	प्राचार्य	शिकारपुर, बुलंदशहर, मेरठ	9412528380	drbhimsingh744@gmail.com
15	प.उ. प्रदेश	श्री कृष्ण दयाल जी	प्रदेश मंत्री	मथुरा	9412281413	kdamtr48@gmail.com

16	प.उ. प्रदेश	श्री शिवकुमार जी	सचिव	मथुरा	9837268354	
17	प.उ. प्रदेश	डा. मुकेश कुमार शर्मा	प्राचार्य	हापुड़	9410442761	drmukeshkumarsharma@gmail.com
18	पूर्वी उ. प्रदेश	डा. रेणु माथुर	महाविद्यालयीन शिक्षा प्रमुख	झाँसी	9415113234	renumathur1000@gmail.com
19	पूर्वी उ. प्रदेश	डा. हरेश प्रताप सिंह	प्रांतीय प्रतिनिधि	कानपुर	9415401705	drhpsingh70@gmail.com
20	पूर्वी उ. प्रदेश	डा. प्रदीप कुमार श्रीवास्तव	निदेशक	रुमा, कानपुर, म.विद्यालय	9454032877	
21	उत्तर-पूर्व	डा. नंद कुमार इंदु	कुलपति एवं अध्यक्ष	बिहार क्षत्र	9801766297	drnkyadavindu@yahoo.com
22	उत्तर-पूर्व	श्री प्रकाश चन्द्र	मंत्री	विद्या भारती	9431115763	prakashcvb@gmail.com
23	उत्तर-पूर्व	श्री दिवाकर घोष	संगठन मंत्री	बिहार क्षत्र	9431107735	ghoshdiwakar35@gmail.com
24	उत्तर-पूर्व	श्री दिलीप कुमार झा	क्षेत्रीय सचिव	मुजफ्फरपुर, बिहार	9430814385	dilipjh4@gmail.com
25	उत्तर-पूर्व	डा. रामकेश पाण्डेय	प्राचार्य	राँची, झारखण्ड	8409033840	dr.rkpandit@yahoo.com
26	उत्तर-पूर्व	श्री राजीव कमल बिट्टू	सचिव	राँची, झारखण्ड	9431701141	rkbittu@yahoo.com
27	उत्तर-पूर्व	श्री रमेन्द्र राय	सचिव	भागलपुर, बिहार	9431011261	ramendrarai5@gmail.com
28	उत्तर-पूर्व	डा. अजित पाण्डेय	प्राचार्य	भागलपुर, बिहार	9471613075	ajitpandey1972@gmail.com
29	उत्तर-पूर्व	श्री मधुसुदन झा	विभागाध्यक्ष	ती.मां.वि. भागलपुर, बिहार	8935968387	
30	उत्तर-पूर्व	डा. दीप्तांशु भास्कर	प्राचार्य	मुजफ्फरपुर	9525373351	diptansubhaskar@gmail.com
31	उत्तर-पूर्व	डा. श्रीप्रकाश पाण्डेय	सह मंत्री	मुजफ्फरपुर	8051696738	
32	उत्तर-पूर्व	श्री फूल सिंह	उपाध्यक्ष, जैक	राँची, झारखण्ड	9431122949	dnb_rajkamal@yahoo.co.in
33	उत्तर-पूर्व	श्री राम अवतार नरसरिया	अध्यक्ष		9334711824	narsaria.ramawtar@gmail.com
34	पूर्व	श्री मोहन राव	प्राचार्य	ओडिसा	9437335569	65vmdegree@gmail.com

35	दक्षिण मध्य	श्री पूर्ण चंद्र राव	प्राचार्य	ओंगल, आंध्रप्रदेश	9866716346 9493656346	kpraoakvke@gmail.com
36	दक्षिण मध्य	श्री के. नटराज कुमार	प्राचार्य	लॉ. कॉ. ओंगल, आंध्रप्रदेश	9440591678	doctornataraaj@yahoo.in
37	दक्षिण मध्य	श्री वी. नरसिंहाराव	सचिव	ओंगल, आंध्रप्रदेश		
38	दक्षिण मध्य	श्री सी.बी. रामकृष्ण राव	सदस्य	ओंगल, आंध्रप्रदेश	9440000265	cvrkrao@gmail.com
39	दक्षिण मध्य	डा. जी. चंद्रशेखर नायडू	प्राचार्य	बी.वी.के. विशाखापत्तनम	9948162910	officebvkcollege@gmail.com
40	दक्षिण मध्य	श्री चक्रपाणि बल्लूरी	सह मंत्री	विशाखापत्तनम	9849137788	pani@vbctv.in
41	दक्षिण मध्य	श्री के. विश्वनाथ	डीन	विशाखापत्तनम	9440181069	viswanath.au@gmail.com
42	पश्चिम	मा. दिलीप बेतकेकर	उपाध्यक्ष	विद्या भारती	9422448698	dilipbetkekar@gmail.com
43	पश्चिम	डा. आशीष मुकुंद पौराणिक	प्रांत प्रमुख	प.महाराष्ट्र, पुणे	9028886158	ashishupuranik@gmail.com
44	पश्चिम	श्री दादा साहेब रंगनाथ काजले	प्राचार्य	अहमदनगर, महाराष्ट्र	8180870932	kajaledada@gmail.com
45	पश्चिम	श्री दादा राम जी दवान	अध्यक्ष	अहमदनगर, महाराष्ट्र	9421331031	datadnavean@gmail.com
46	पश्चिम	श्री दत्तात्रेय ज्ञेनवा जगताय जी	निदेशक	अहमदनगर, महाराष्ट्र	9422235707	dattjijagtap5707@gmail.com
47	पश्चिम	श्री ज्ञानेश्वर अच्युतराव अंदुरे	निदेशक	अहमदनगर, महाराष्ट्र	9421314747	anduremauli4747@gmail.com
48	पश्चिम	श्री सचिन जोशी	सचिव	अकोला, महाराष्ट्र	9823483348	joshiasso@gmail.com
49	पश्चिम	श्री प्रशांत चौधरी	प्रांतीय प्रतिनिधि	उस्मानपुर, देवगिरी		
50	पश्चिम	श्री प्रकाश भाणिष्कर	उप प्राचार्य	चालीसगाँव, देवगिरी	9420383322	pbaviskar2@gmail.com
51	पश्चिम	श्री नीतिन पैठानी	प्रांत प्रमुख	अहमदाबाद, गुज.	9099951909	nmpethani@rediffmail.com
52	पश्चिम	श्री राणछोड़ भाई बधेशिया	अध्यक्ष	धौराजी	9426269920	bedcollege-bhutvad@rediffmail.com
53	पश्चिम	श्री धवनीश भाई मेहता	प्रभारी	सूरत, गुजरात	9924892266	ravalb09@gmail.com

54	पश्चिम	श्री नरेन्द्र पटेल	प्राचार्य	सूरत, गुजरात	9925626020	narendra101075@gmail.com
55	पश्चिम	डा. चिराग भाई स्वामी	उप प्राचार्य	सुरेन्द्र नगर, ऊँझा	9428850008	chirag_825@yahoo.com
56	राजस्थान	श्री ओम प्रकाश जी	क्षेत्र प्रमुख	जयपुर	9462694846 9829132131	gupta.op.dr@gmail.com
57	राजस्थान	श्री बद्रीलाल जी चौधरी	मा.शि.बो.	जयपुर	9828302672	
58	राजस्थान	श्री प्रमेन्द्र प्रताप दसौरा	कुलपति	कोटा, राजस्थान	9414162682	
59	राजस्थान	श्री दुर्गा प्रसाद अग्रवाल	प्रांतीय प्रतिनिधि	जयपुर	9414428597	dpagr49@gmail.com
60	राजस्थान	श्री सुशील कुमार गुर्जर	सचिव	बांदीकुई, जयपुर	9460637938	
61	मध्य	डा. गोविन्द्र शर्मा	अध्यक्ष	विद्या भारती	9425430172	govindsharma1939@gmail.com
62	मध्य	श्री भरत जी व्यास	मंत्री/सचिव	उज्जैन	9425917171	bvyasujn@gmail.com
63	मध्य	डा. निशा महाराणा	प्राचार्य	मंदसौर, म. क्षेत्र	9425949486	nisha.smaharana@gmail.com ssmvmandsaur@gmail.com
64	मध्य	श्री अशोक कुमार पारीख	सचिव	मंदसौर, म. क्षेत्र	9424897388	
65	मध्य	डा. सुभाष गुप्ता	प्रांत प्रमुख	इंदौर	9826042102	drsubhash06@gmail.com
66	मध्य	श्रीमती मंगला दवे	सदस्य	रतलाम	9981528688	
67	मध्य	श्री राजेश तिवारी	प्रबंध समिति	उज्जैन	9406841345	shripadtraveles@yahoo.com
68	मध्य	श्री धीरेन्द्र भदौरिया	प्रांतीय प्रतिनिधि	मध्य भारत, भोपाल	8989475218	dsbhadauria1963@gmail.com
69	मध्य	श्री मनोहर सांलंकी	प्राचार्य	शारदा बिहार	9827203291	
70	मध्य	श्री जय सावंत	प्रभारी	शारदा बिहार	7747006754	jaysawant80@gmail.com
71	मध्य	श्री राधेश्याम गुप्त	सचिव	मुरैना	9425126110	
72	मध्य	श्री जगदीश सिंह चौहान	सचिव	भिंड	9977723291	madhavdham10@gmail.com
73	मध्य	डा. सुनील पाठक	प्राचार्य	ग्वालियर	9425187342	sunilpathak@yahoo.com

74	मध्य	श्री कपिल मिश्रा	कुलपति	जबलपुर	8821838985	vcrdvv@gmail.com drkapil.ckt@gmail.com
75	मध्य	श्री नरेन्द्र कोष्टी	प्रांत प्रमुख	जबलपुर	9479491222	dr.narendra_koshti@rediffmail.com
76	मध्य	श्री संदीप पांडेय	प्राचार्य	जबलपुर	9893501288	sandeepsiet09@gmail.com
77	मध्य	श्रीमती एकता तिवारी	प्राचार्य	रीवा	9993919493	ektatiwari@gmail.com
78	मध्य	श्री रामेश्वर गुप्ता	सचिव	रीवा		
79	मध्य	श्री ईश्वर दयाल तिवारी	प्राचार्य	जगदलपुर, छत्ती.		idtiwari2512@gmail.com
80	मध्य	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	सचिव	जगदलपुर, छत्ती.	9424283955	
81	मध्य	श्री अतुल तिवारी	जिला प्रतिनिधि	अंबीकापुर, छत्ती.	9589947372	atul.saraisin@gmail.com
82	मध्य	श्री भगवती प्रसाद तिवारी	प्राचार्य	अंबीकापुर, छत्ती.	9691805806	drtiwari@gmail.com
83	मध्य	श्री अजित कुमार परिहार		अंबीकापुर, छत्ती.	8821844947	ajeet88parihar@gmail.com
84	मध्य	रानी रजक	बी.एड. कॉलेज	अंबीकापुर, छत्ती.	8889909528	ranirajak9567@gmail.com
85	मध्य	श्रीमती स्मिता भवालकर	प्राचार्य	उज्जैन	9425332815	hsbhasvalkar@gmail.com
86	मध्य	श्री अजय जी शिवहरे	सचिव	भोपाल		
87	मध्य	श्री प्रशांत पाल	अध्यक्ष	जबलपुर		
88	मध्य	श्री योगेन्द्र जी कौशिक	आयकर अधिवक्ता	जगदलपुर, छत्ती.		
89	मध्य	श्री राकेश सिंह कुशवाहा	सचिव	ग्वालियर	9425339542	
90	मध्य	श्रीमती विवेक भदौरिया	प्राचार्य	ग्वालियर	9425118819	vivek.bhaduria72@gmail.com

स्मृति चित्रावली

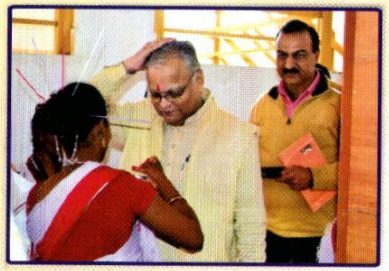

स्मृति चित्रावली